

[illegible]

जी १ अंखें स्त्रादा ॥ दकाभद्वजमवर्द्ध ॥ काय गंधनागर्न ॥ जी १ कायवीर्यदंताच ॥ कायलासुर्ग
 नूर्य यश्च ॥ यूनवभायनि ॥ अं १ कायवर्गिना ॥ स्त्रादामृतमानीया ॥ मयुर्वच्य ॥ अं १ अं १
 अमृतयुर्वमयं ॥ मगाडै ॥ अं १ अं १ अं १
 सु.ग ॥ दिग्विजि सावना ॥ द्वाधया ॥ अं १
 यनगमि कूटांगनायचय ॥ सलुलन
 विमिनाय ॥ कथावच ॥ मदिमिजिनु ॥ आयवयन ॥ अं १ कक धन ॥ वधवधन ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 न सर्वे इष्टान् दन ॥ यद्युघाटय ॥ अमकस्य ॥ मनि कूनु ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

ल्यशिम ॥ अं १ विविध किनलविधि ॥
 धनीविशवा ॥ सद्यकवर्चद ॥ अं १ विविध्या गुल्या ॥ अं १
 जले ॥ सीवादनो ॥ दक्षिण ॥ स्त्रानसलवृ
 यी यीमी सीमायीमीवनी ॥ विविधरु
 नकवकायूनमस्मि ॥ मविविध ॥ अं १
 समास ॥ अं १ दिवाली काल ॥ अं १
 सुलकर्म ॥ सुखाधयजी ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

मी ग

सायना ॥

॥ गंधमसुला ॥ मल्लम ॥ धनियय ॥ ॥ नदनूर्वरावी वसु
 ययुधिविधवमया ॥ मदकीरुगीयीत्यावदद
 ॥ गृदिनकनक घटासय ॥ वासमनकवदयी
 ॥ अं १ अं १ अं १ अं १ अं १
 निधाय ॥ यजसल्ययुजि ॥ गृहीत्या ॥ अं १ अं १
 ॥ लंदविसाकिरुगासि ॥ सर्ववृष्टानुगायिनी ॥

चर्यानेयविशेषन कृमियाचमितासूत्र ॥ यथमात्रवर्गं रम्यं भक्तसिंहनगायिना । मथमाल
 वलीजित्वा मधुलंलखिकामादं ॥ सायेयैकियगामित्युक्ता नमेवलीनीचिकयम् ॥ नभाकजयधः
 मूडया ॥ डं वजी सवदं डं वजी यधनमि यमकल डं काचविशये जामसामनी वंजी सव
 विगाय ॥ डं वजी निष्ठं ३ ॥ धर्मगन मधुलसंश्रुभिष्ठानयाय ॥ ॐ निवसुधानाधि
 वासनविधि ॥ ॥ मधुलदाभ ॥ नवधनकी अष्टद्वयद्यवाय मुद्रिसकलम
 धूययादाव लखधन यचनत्त यचविदि । यथायधि ॥ धर्मद्वयम् । अष्टद्वय दिस्ति कृत्तक
 मलिसद्युक्ताय युका सखिन गजस मयक ॥ डं वजी सवदं डं वजी यधनमि यमकल डं काचविशये जामसामनी वंजी सव

३

दानिन नंगत्त कनभायविनीलवर्गसंस्त्राय ॥ गावना ॥ य. ली. व. द. व. वीजनिष्ठनाग ॥ वं. औ
 डीखी डं जान वेगाचन मत्तसंस्त्रायामितासा भाद्यसिद्धि कायवृथान्धात्वा ॥ नशानिवमिनः
 यचनथागमदत्तसूर्यका नादिकूननं ॥ ॥ गेशज ॥ काजज यीमेचदुस्यस्यवृथान चकद
 यो ॥ डं दी फट् गमिज ॥ यडुमयवः ॥ ॥ वज्रयकाकवेन यादी फट् घाटि कौमेवाक
 स्रष्टवरे कूनन ॥ गेशमदेकनगास्तगाः ॥ विचिन्ना ॥ आ. या. ॥ डं वं वज विरु समयडं ॥ ॥
 ॥ गिमनंगस्य ॥ ॥ डं आ ॥ वजीवी ॥ ॥ १०८ ॥ यीम ॥ ॥ डं डी वजीवी ॥ ॥ १०८ ॥ वका ॥ ॥
 डं खवजिची ॥ ॥ १०८ ॥ दविम ॥ ॥ डं डं वजीवी ॥ ॥ १०८ ॥ नीव ॥ ॥ सद्योवमिकमकुलः

स्वकनवजप्रियान्नविशाय ॥ यं. ला. र्चं. ॥ मञ्जुलसद्वदाय ॥ धर्मो धारुल यं शुद्धं सर्वसत्त्वयुभाय क
 ॥ स्वयं वज्रप्रभावाका सर्वनाथगताय यं । सर्वदा ये विनिमूर्कं चक्राय नमः सीलिन ॥ ॐ ह्युक्ता मञ्जु
 लदा नमः प्रादाव ॥ ॐ भानवानसं खव
 ॥ ॐ श्री ॥ ॐ ॥ वलि । यं. ला. र्चं. मु. न. ॥ ॐ
 याननविधि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ धनलि च
 निमं भज ज्ञा ॥ ॐ वज्रसूत्रं गरी ॥ ॐ ह्यभन नियात्य यथास्माननिवभयम् ॥ मञ्जुलार्चं रुव
 याकिनन धवधवधायस् मदाचर्कं वाय कीलननार्चं यैवदभायनाय वाय ॥ पूर्वम् ॥ ॐ नुस

१